Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

जनजातियों का सामाजिक एवं शैक्षिक विकास : एक अध्ययन

Dr. Ramesh Prasad Kol
Assistant Professor, Department of Political Science
RVPS PMCOE Government PG College, Umaria
Madhya Pradesh – 484661, India
Email: dr.rameshprasadkol@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180316
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 88-91
March- 2026
Submitted:25 Feb. 2026
Revised: 04Mar. 2026
Accepted: 10 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश (Abstract)

भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी देश है, जहाँ विभिन्न जातीय और सामाजिक समूह निवास करते हैं। इन समूहों में जनजातीय समुदाय या अनुसूचित जनजातियाँ एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। जनजातीय समुदायों का जीवन मुख्यतः प्रकृति, वन संसाधनों और पारंपरिक जीवनशैली पर आधारित होता है। ऐतिहासिक रूप से ये समुदाय सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने जनजातीय समुदायों के विकास के लिए अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम शुरू किए हैं। इसके बावजूद कई क्षेत्रों में जनजातीय समाज अभी भी गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य समस्याओं और सामाजिक अलगाव जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदायों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना, उनके विकास में आने वाली समस्याओं का विश्लेषण करना तथा उनके समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा जनजातीय समुदायों के विकास का सबसे प्रभावी साधन है।

प्रस्तावना

भारत की जनसंख्या में जनजातीय समुदायों का महत्वपूर्ण योगदान है। ये समुदाय देश की सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जनजातियाँ प्राचीन काल से ही भारत के वन क्षेत्रों, पर्वतीय इलाकों और दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती रही हैं। जनजातीय समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज और सामाजिक संरचना होती है। इनकी जीवन शैली प्रकृति के साथ गहरे संबंध पर आधारित होती है। लेकिन आधुनिक विकास और औद्योगीकरण के प्रभाव से जनजातीय समाज में कई परिवर्तन आए हैं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने अनुसूचित जनजातियों को विशेष संरक्षण और अधिकार प्रदान किए। सरकार ने इनके विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक कल्याण से संबंधित कई योजनाएँ लागू कीं। इसके बावजूद आज भी कई जनजातीय समुदाय मुख्यधारा के विकास से पीछे हैं। जनजातीय समाज के समग्र विकास के लिए शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जागरूकता, आर्थिक अवसर और जीवन स्तर में सुधार संभव है।

जनजाति की अवधारणा

जनजाति एक ऐसा सामाजिक समूह होता है जो समान भाषा, संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक संगठन से जुड़ा होता है। समाजशास्त्रियों ने जनजाति की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। समाजशास्त्री डी.एन. मजूमदार के अनुसार, "जनजाति ऐसे परिवारों का समूह है जो एक निश्चित क्षेत्र में निवास करते हैं और जिनकी भाषा, संस्कृति और सामाजिक संगठन समान होता है।"

जनजाति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. समान भाषा और संस्कृति
2. निश्चित भौगोलिक क्षेत्र
3. सामुदायिक जीवन शैली
4. पारंपरिक रीति-रिवाज
5. सामाजिक एकता और सहयोग

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Dr. Ramesh Prasad Kol, Assistant Professor, Department of Political Science
RVPS PMCOE Government PG College, Umaria Madhya Pradesh – 484661, India

How to cite this article:
Kol, R. P. (2026). जनजातियों का सामाजिक एवं शैक्षिक विकास : एक अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(3(A)), 88–91. https://doi.org/10.5281/zenodo.19607551

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19607551
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

जनजातीय समाज मुख्यतः प्रकृति के संसाधनों पर निर्भर होता है और इनकी आर्थिक गतिविधियाँ कृषि, वनोपज, शिकार और पशुपालन पर आधारित होती हैं।

भारत में जनजातीय जनसंख्या

भारत में जनजातीय समुदायों की संख्या काफी अधिक है। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6% हिस्सा अनुसूचित जनजातियों का है। भारत में लगभग 700 से अधिक जनजातियाँ पाई जाती हैं। ये विभिन्न राज्यों में फैली हुई हैं, विशेष रूप से मध्य भारत, पूर्वोत्तर भारत और दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में।

प्रमुख जनजातीय राज्य

- मध्य प्रदेश
- छत्तीसगढ़
- झारखंड
- ओडिशा
- राजस्थान
- गुजरात
- महाराष्ट्र

मध्यप्रदेश को भारत का "जनजातीय हृदय प्रदेश" कहा जाता है क्योंकि यहाँ जनजातीय आबादी का प्रतिशत अधिक है।

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ

1. भील
2. गोंड
3. बैगा
4. कोरकू
5. सहरिया

इन जनजातियों की अपनी अलग संस्कृति, भाषा और परंपराएँ हैं।

जनजातीय समाज की सामाजिक संरचना

जनजातीय समाज की सामाजिक संरचना परंपराओं और सामुदायिक जीवन पर आधारित होती है।

परिवार व्यवस्था

जनजातीय समाज में परिवार सामाजिक जीवन की मूल इकाई होता है। यहाँ संयुक्त परिवार प्रणाली अधिक प्रचलित होती है।

परिवार के प्रमुख कार्य:

- सामाजिक सुरक्षा
- आर्थिक सहयोग
- बच्चों का पालन-पोषण
- सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण

विवाह व्यवस्था

जनजातीय समाज में विवाह की कई परंपराएँ पाई जाती हैं। विवाह को सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था माना जाता है।

मुख्य विवाह प्रकार:

- प्रेम विवाह
- सेवा विवाह
- अपहरण विवाह
- विनिमय विवाह

सामाजिक संगठन

जनजातीय समाज में सामाजिक संगठन गाँव की पंचायत या मुखिया द्वारा संचालित होता है। यह पंचायत सामाजिक विवादों का समाधान करती है।

जनजातीय समाज की आर्थिक स्थिति

जनजातीय समाज की आर्थिक स्थिति सामान्यतः कमजोर होती है।

इनकी मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ हैं:

- कृषि
- वनोपज संग्रह
- पशुपालन
- हस्तशिल्प

वनों पर निर्भरता के कारण जनजातीय समुदायों की आय सीमित होती है। आधुनिक विकास और वन कानूनों के कारण कई जनजातीय समुदायों को अपनी पारंपरिक आजीविका में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

जनजातियों की सामाजिक समस्याएँ

जनजातीय समुदायों को कई सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अशिक्षा

अशिक्षा जनजातीय समाज की सबसे बड़ी समस्या है। कई क्षेत्रों में विद्यालयों की कमी और शिक्षकों की अनुपस्थिति के कारण शिक्षा का स्तर कम है।

गरीबी

जनजातीय समाज में गरीबी का स्तर अधिक है। सीमित संसाधनों और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है।

स्वास्थ्य समस्याएँ

जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण कुपोषण, मलेरिया और अन्य बीमारियाँ अधिक पाई जाती हैं।

सामाजिक अलगाव

जनजातीय समुदाय अक्सर मुख्यधारा के समाज से अलग रहते हैं, जिससे उनका सामाजिक विकास धीमा हो जाता है।

जनजातियों की शैक्षिक स्थिति

जनजातीय समाज में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है।

इसके प्रमुख कारण हैं:

1. विद्यालयों की कमी
2. आर्थिक गरीबी
3. सामाजिक जागरूकता की कमी
4. भाषा की समस्या
5. दूरस्थ क्षेत्र

हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ है।

सरकार और विभिन्न संस्थाओं के प्रयासों से जनजातीय छात्रों की विद्यालयों में भागीदारी बढ़ रही है।

जनजातीय शिक्षा में आने वाली चुनौतियाँ

जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के विकास में कई चुनौतियाँ हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ

1. दूरस्थ भौगोलिक क्षेत्र
2. भाषा का अंतर
3. आर्थिक समस्याएँ
4. शिक्षकों की कमी
5. सामाजिक जागरूकता की कमी

इन चुनौतियों के कारण कई जनजातीय बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

जनजातीय शिक्षा के विकास में सरकारी योजनाएँ

भारत सरकार ने जनजातीय शिक्षा के विकास के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं।

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

इन विद्यालयों का उद्देश्य जनजातीय छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

छात्रवृत्ति योजना

जनजातीय छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है ताकि वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें।

आश्रम विद्यालय

दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में आवासीय विद्यालय स्थापित किए गए हैं।

ट्राइबल सब-प्लान

यह योजना जनजातीय क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए शुरू की गई है।

सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा जनजातीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सामाजिक जागरूकता

शिक्षा से सामाजिक कुरीतियों में कमी आती है और लोगों में जागरूकता बढ़ती है।

आर्थिक विकास

शिक्षा से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

स्वास्थ्य सुधार

शिक्षित लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति अधिक जागरूक होते हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

महिला सशक्तिकरण

शिक्षा के माध्यम से जनजातीय महिलाओं की स्थिति में सुधार होता है।

जनजातीय विकास में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

कई गैर-सरकारी संगठन जनजातीय विकास के लिए कार्य कर रहे हैं।

इनका मुख्य उद्देश्य है:

- शिक्षा का प्रचार
- स्वास्थ्य सेवाएँ
- महिला सशक्तिकरण
- कौशल विकास

ये संगठन जनजातीय समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जनजातीय विकास के लिए सुझाव

जनजातीय समाज के सामाजिक और शैक्षिक विकास के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

1. जनजातीय क्षेत्रों में अधिक विद्यालय स्थापित किए जाएँ।
2. स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान की जाए।
3. जनजातीय छात्रों के लिए छात्रवृत्ति बढ़ाई जाए।
4. स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत किया जाए।
5. कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए जाएँ।
6. जनजातीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण किया जाए।

निष्कर्ष

जनजातीय समुदाय भारत की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनका सामाजिक और शैक्षिक विकास देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। हालाँकि सरकार ने कई योजनाएँ शुरू की हैं, लेकिन जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा और सामाजिक विकास को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। शिक्षा के माध्यम से जनजातीय समाज में सामाजिक जागरूकता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक संरक्षण संभव है। यदि सरकार, समाज और जनजातीय समुदाय मिलकर प्रयास करें तो जनजातीय समाज का समग्र विकास संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मजूमदार, डी. एन. (2007). भारतीय जनजातीय समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. विद्यार्थी, एल. पी. (1991). भारत की जनजातियाँ. दिल्ली: श्याम प्रकाशन।
3. दुबे, एस. सी. (2005). भारतीय समाज. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
4. सिंह, के. एस. (1994). Tribal Society in India. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. शर्मा, आर. एन. (2010). भारतीय समाज और संस्कृति. दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
6. भारत सरकार (2011). जनगणना रिपोर्ट – अनुसूचित जनजाति. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।
7. जनजातीय कार्य मंत्रालय (2019). भारत में जनजातीय विकास की रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. एनसीईआरटी (NCERT). जनजातीय शिक्षा पर अध्ययन रिपोर्ट. नई दिल्ली।
9. चौधरी, किशना राम (2015). जनजातीय समाज और विकास. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
10. श्रीवास्तव, ए. आर. (2012). भारतीय जनजातियों का समाजशास्त्र. दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।